दिनांक :- 09-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- प्रथम

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- मौर्योत्तर काल स्रोत

विभिन्न केन्द्र :- प्रथम तथा द्वितीय शताब्दी में राजगृह एक महत्वपूर्ण केन्द्र था। इस स्थल से श्वेतांबर सम्प्रदाय के वज्रमुनि का नाम जुड़ा हुआ है। मथुरा तथा उज्जैन भी जैन धर्म का महत्वपूर्ण केन्द्र था। उत्तर पश्चिम में तक्षशिला में सिरकप नामक स्थान बौद्ध केन्द्र के साथ जैन केन्द्र भी था उसी प्रकार भड़ौच तथा सोपारा भी

महत्वपूर्ण केन्द्र थे उड़ीसा में भुवनेश्वर निकट उदय गिरी तथा रत्नगिरी महत्वपूर्ण केन्द्र थे।

ब्राह्मण धर्म :- शैव उपासना

शिव के प्रथम परिचय सिंधु घाटी की सभ्यता में होता है।

ऋग्वेद में रुद्र की चर्चा देवता के रूप में की गई है। यह रुद्र प्रकृति के उग्र क्रोधपूर्ण एवं घातक तत्वों के प्रतीक थे जो पशुओं का विनाश करते थे तथा मनुष्यों को दुखः देते है।

यजुर्वेद के सुप्रसिद्ध शतरुद्रीय सूक्त में रुद्र के विनाशक रूपों के साथ-साथ उनके उदार गुणों की भी चर्चा की गई है। इस प्रकार वैदिक काल की तुलना में उत्तरवैदिक काल तक उनका महत्व बढ़ गया।

अथर्ववेद में रुद्र के सात नाम मिलते है। रुद्र, भव, सर्व पशुपति, उग्र, महादेव, ईशन्

परवर्ती काल में शिव उपासना के साथ भक्ति के उपनिषद

मे शिव भक्ति का पहला उल्लेख है जहाँ पर ऋषि श्वेताश्वर भक्ति पूर्वक रुद्र की शरण लेता है।
बौद्ध ग्रंथ निद्देस मे शिव उपासको की भी चर्चा है। सांख्यायन कौशितिकी एंव अन्य ब्राह्मणो मे शिव एंव उसके अन्य नाम रुद्र, शिव, महादेव तथा महेश्वर भी मिलते है।
कौशितकी ब्राह्मण मे ईसन तथा महादेव की चर्चा है यहाँ तथा शतपथ ब्राह्मण मे उसने आठवे नाम अशनि का भी उल्लेख हुआ है। इनमे से चार नाम क्यातु रूप तथा चार नाम विनाशक रूप को प्रदर्शित करते है।
पाणिनी ने अष्टाध्यायी मे शैव भागवत की चर्चा की है मेगास्थनीज भी डायोनिसस (शिव) की पूजा का उल्लेख करता है।
ईसा पूर्व दूसरी सदी मे पातजलि शिव भागवतो की चर्चा की है। इससे संकेत मिलता है

Scanned with CamScanner

कि उस समय शिव की मूर्ति पूजा प्रारंभ हो चुकी थी पातंजलि ने शैव भागवतो के लिये अयस्य शुलिका न कहा है। इसका अर्थ होता है लोहे का डण्डा धारण करने वाला। शैव भगवत दंडजिन भी कहलाते है।

मानव आकार में शिव की मूर्ति कोसम से प्राप्त होती है कालिदास के रघुवंश में शिव की स्तुति है। कालिदास न की रचनाओ में काशी के विश्वनाथ तथा उज्जैन के महाकाल्य मंदिर की चर्चा है। लिंग पूजा का प्रथम वर्णनान मत्स्य पुराण में मिलता है। उत्तर में माऊंट कैलाश तथा दक्षिण में चिदम्बरम तथा तिरुवलई शिव का स्थान माना गया है।

मद्रास के पास गुडडीमलम एंव मध्य प्रदेश के भिटा से ऐसे लिंग प्राप्त होते है जिन पर शिव की आकृति भी न मिलता है। वामन पुराण के अनुसार शैव धर्म से

जुड़े हुए गुप्त काल में चार उपसंप्रदाय हुए :

① शैव धर्म ② पाशुपत धर्म

③ कापालिक धर्म ④ कालामुख धर्म

महाभारत के पाँच स्कूलों में सांख्य, योग, पांच रात्र तथा वेद के साथ पशुपात स्कूल की भी चर्चा मिलती है। ज्ञातव्य है कि लकुलिश ने पाशुपात सम्प्रदाय को चलाया था। पशुपात धर्म के अनुयायी पंचार्थिक कहलाते थे। वायु, कुर्म और लिंग पुराणों के अनुसार जिस जमाने में वासुदेव कृष्ण उत्तरी भारत में अपना धर्म फैला रहे थे। उसी समय कायावरोहण नामक स्थान में लकुलीश का जन्म हुआ। उन्हें शिव का अट्ठाइसवाँ और अंतिम अवतार मान लिया गया।

लकुलिश के विचार पाशुपत सूत्र में मिलते हैं। इसके आधार पर चौदहवी सदी में

माधवाचार्य ने सर्वदर्शन संग्रह लिखा। लकुलिश को पंचरात्रार्थविद्या नामक ग्रंथ लिखने का श्रेय दिया जाता है।
चन्द्रगुप्त द्वितीय के मथुरा स्तंभ अभिलेख में लकुलीश के विषय में जानकारी मिलती है। लकुलिश के चार शिष्य थे- कुशिक, मित्र, गर्ग, कौरुष्य।
लकुलीश शिव को समस्त सृष्टि का कारण मानते हैं तथा उन्हें पति कहते हैं। जीवात्मा को पशु माना गया है पशु 23 भौतिक तत्वों के जाल से जकड़ा है। उनके लिये कला या पाश शब्द का प्रयोग हुआ है। किंतु पशु का एक गुण विद्या भी है। इसके द्वारा वह कला ओं तथा पाशों में छुटकारा पाता है। इस मुक्ति के लिये उस समय भी बनारस शैवों का एक गढ़ था। यहाँ अनेक मंदिर तथा महेश्वर शैवों का एक गढ़ था। यहाँ अनेक मंदिर तथा महेश्वर की 100 फीट ऊँची एक तांबे की मूर्ति थी।

Scanned with CamScanner

पाशुपत सम्प्रदाय के अनुसार सत्य की प्राप्ति तथा ज्ञान और कर्म की उच्चता तक पहुँचने के निमित अन्य बातो के अतिरिक्त निम्नांकित कार्य अनिवार्य थे

(1) शरीर में भस्म मलना तथा भस्म पर ही सोना।

(2) गले तथा ओठो से जोरो के साथ खींचकर हा हा का स्वर नाद करना।

(3) हुडुक्कार (जीभ को तालु से लगाकर बैल की बोली के समान पवित्र नाद करना

(5) ऐसे काम करना जिसकी दूसरी भर्त्सना करे और जान पड़े कि अच्छे बुरे कर्मों का कोई ज्ञान ही नही रह गया है।

आगे पशुपात धर्म से ही कालापालिक तथा काल मुख सम्प्रदाय का विकास हुआ। ये सम्प्रदाय पंच मकारो में विश्वास रखते थे।